ISSN: 2582-7162

लेख

रविन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचारों का शिक्षा पर प्रभाव

राजकुमार रावत[1], शरद कुमार वर्मा[2]

[1]पीएच0डी0 शोधकर्ता, शिक्षा विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक।
[2]प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, बाबा मस्तनाथ विशविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक।

Corresponding author: राजकुमार रावतएपीएच0डी0 शोधकर्ता, शिक्षा विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक।
Email: Rajkumarktp784@gmail.com

प्रस्तावना

यह अध्ययन रविन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचारों का शिक्षा पर प्रभाव का अध्ययन करने काएक प्रयास है। उनके शैक्षिक विचारों को समझने के लिए, विभिन्न स्रोतों से सूचना एकत्र की गई थी, जैसे पुस्तकें, लेख, संदर्भ सामग्री, और अन्य संसाधन। इस अध्ययन में रविन्द्रनाथ टैगोर द्वार लिखित पुस्तकके लेखों, भाषणों, और संवादों को विशेष महत्त्व दिया गया है। अध्ययन में पाया कि रवींद्रनाथ टैगोर के शैक्षिक दृष्टिकोण ने शिक्षा को एक नया आयाम दिया है। उनके विचार शिक्षा को सिर्फ पढ़ाई–लिखाई से नहीं, बल्कि जीवन का एक अनुभव समझते थे। उन्होंने शिक्षा को जीवन के साथी के रूप में देखा, जो विचारों, भावनाओं, और समाज के साथ जुड़ा होता है। टैगोर की दृष्टि ने शिक्षार्थी के व्यक्तिगत और सामाजिक विकास को बढ़ावा दिया। उन्होंने शिक्षा को सिर्फ ज्ञान की सीमाओं से बाहर ले जाकर, उसे जीवनशैली और समाज में सक्रिय भागीदारी का एक साधन बनाया। इस प्रकार, उनके शैक्षिक दृष्टिकोण ने शिक्षा को समर्थन और संपूर्ण विकास का माध्यम बनाया, जो छात्रों को सिर्फ ज्ञानी नहीं, बल्कि समर्थ और समझदार बनाने की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करता है।

मुख्य शब्द : शैक्षिक, विचारों, शिक्षा, प्रभाव

SDES- International Journal of Interdisciplinary Research is a journal of Open access. In this journal, we allow all types of articles to be distributed freely and accessible under the terms of the creative common attribution- non commercial-share. This allows the authors, readers and all scholars and general community to understand, use and to develop non-commercially work, as long as appropriate credit is given and the newly developed work are licensed with similar terms.

How to cite this article: रावत रा. वर्मा श. कु. रविन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचारों का शिक्षा पर प्रभाव. SDES-IJIR; 2023; 4-6: 729-732

Submitted: 26-December-2023; **Accepted:** 02-January-2023; **Published:** 8-January-2024

भूमिका

रवींद्रनाथ टैगोर, भारतीय साहित्य के एक महान और प्रभावशाली लेखक, कवि, और विचारक थे। उन्होंने भारतीय संस्कृति और दर्शन को एक नयी दिशा दी। उनका जन्म 7 मई, 1861 को कलकत्ता में हुआ था। उनके पिता, देवेंद्रनाथ टैगोर, एक विश्वस्त शिक्षाविद् थे और वे एक संस्कृति–सजीवक के रूप में विख्यात रहे। रवींद्रनाथ ने विश्वभर में अपनी रचनाओं से महत्त्वपूर्ण पहचान बनाई। उनकी कविताएं, कहानियाँ, नाटक और निबंधों में भारतीय संस्कृति, प्रेम, प्राकृतिक सौंदर्य, और मानवता के विचारों को सुंदरता से व्यक्त किया। उनका सर्वाधिक प्रसिद्ध काव्य–संग्रह "गीतांजलि" (रवींद्रनाथ 1910) विश्व साहित्य में एक अनमोल ग्रंथ माना जाता है। रवींद्रनाथ टैगोर ने 1913 में नोबेल पुरस्कार प्राप्त किया जिससे वे प्रथम भारतीय लेखक बने जो इस सम्मान को प्राप्त करें। उनकी रचनाओं में जीवन के विभिन्न पहलुओं का उत्कृष्ट चित्रण है और उनका योगदान भारतीय साहित्य और संस्कृति को अमर बनाता है।

टैगोर का एक महत्वपूर्ण विचार था कि शिक्षा को जीवन से जोड़ना चाहिए। उन्होंने शिक्षा को केवल पाठयक्रम और पुस्तकों से सीमित नहीं देखा, बल्कि उन्होंने इसे व्यापक अनुभव के साथ जोड़ने की आवश्यकता बताई। उन्हें यह मानना था कि छात्र ज्ञान

और जीवन के साथ संबंधित नहीं रह सकते जब तक उन्हें इन्हें विभाजित नहीं किया जाता। इसके लिए, उन्होंने छात्रों के अध्ययन और जीवन के अनुभवों को एकत्र करने के लिए शिक्षा के प्रयासों को दिशा देने की बात की। इससे छात्र अपने जीवन के विभिन्न पहलुओं को समझते हैं और उनके अनुभवों से सीखते हैं। उनका यह दृष्टिकोण छात्रों के अध्ययन और जीवन के अनुभवों को एकत्र करने के लिए शिक्षा के प्रयासों को दिशा देने वाला था (टैगोर, 1921)। उनकी सोचने का एक और महत्वपूर्ण योगदान यह था कि शिक्षा छात्रों के आत्म–संवर्धन और विकास को प्रोत्साहित करनी चाहिए। टैगोर ने छात्रों के आत्म–विश्वास को महत्वपूर्णता दी और उन्हें आत्म–अवबोध के माध्यम से जीवन के उद्देश्य और अर्थ का अन्वेषण करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने छात्रों के आदर्शों, मूल्यों, और संबंधों के प्रति समझ बढ़ावा दिया, जो उनके व्यक्तिगत और सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण थे। इससे छात्र अपने व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन के पहलुओं में समझौता करने के लिए सक्षम होते हैं।

एक और महत्वपूर्ण विचार जो टैगोर ने प्रस्तुत किया वह था कि शिक्षा को सामाजिक समर्थन के लिए भी होना चाहिए। उन्होंने छात्रों को उनके सामाजिक दायित्वों के प्रति संवेदनशीलता बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। उनका मानना था कि शिक्षा छात्रों को उनके समाज में जिम्मेदार नागरिक बनाने का काम करनी चाहिए और उन्हें अपने समाज के विकास में योगदान देने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। उन्हें समाज के लिए योगदान देने की प्रेरणा देने वाली शिक्षा देनी चाहिए, जो समाज में सकारात्मक परिवर्तन की ओर एक पहचान बनाती है (टैगोर, 1921)।

रवींद्रनाथ टैगोर के विचारों का शिक्षा के क्षेत्र पर गहन प्रभाव है। उनका दृष्टिकोण शिक्षा को एक नई दिशा देता है, जिसमें छात्र जीवन के विभिन्न पहलुओं को समझते हैं और उनके अनुभवों से सीखते हैं। इसके अलावा, उनकी विचारधारा ने छात्रों में सामाजिक उत्कृष्टता और जिम्मेदार नागरिकता की भावना को बढ़ावा दिया है। टैगोर के यह विचार आज की शिक्षा प्रणालियों में भी महत्वपूर्ण हैं और इन्हें आधार बनाकर शिक्षा के क्षेत्र में सुधार की दिशा में कदम बढ़ाया जा रहा है। उनके विचार ने शिक्षा के उद्देश्य को नई दिशा दी और उन्होंने शिक्षा को एक सामाजिक जीवन के साथ संबंधित बनाया (चक्रवर्ती, 2018)।

टैगोर का विचार शिक्षा के लिए समृद्धि और सामूहिक विकास की दिशा में था। उन्होंने शिक्षा को एक सामाजिक उद्देश्य के रूप में देखा और इसे व्यक्तिगत विकास के लिए एक माध्यम माना। उन्होंने यहां तक कहा कि शिक्षा का उद्देश्य है व्यक्तिगत विकास और समृद्धि नहीं, बल्कि समूहिक विकास और समृद्धि होना चाहिए। उन्होंने शिक्षा को समृद्धि के रूप में देखा जो समाज के सभी वर्गों के लिए हो, और इसके लिए विद्यालयों के बाहरी वातावरण और समाजी गतिविधियों के साथ एक अद्वितीय रूप से जोड़ने की आवश्यकता है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, शिक्षा छात्रों को उनके समाजिक जिम्मेदारियों के लिए तैयार करनी चाहिए और उन्हें समाज में सक्रिय भागीदार बनाना चाहिए (टैगोर, 1921)।

रवींद्रनाथ टैगोर ने शिक्षा के उद्देश्य को बदल कर उसे सामाजिक उन्नति के लिए एक माध्यम बनाया। उन्हें यह मानना था कि शिक्षा का सही उद्देश्य है समाज के सभी वर्गों के लिए समृद्धि और समूहिक विकास का निर्माण करना। इसे विद्यालयों के दीवारों से बाहर लाने के लिए, उन्होंने शिक्षा को समाज में संबंधित करने की आवश्यकता की बात की और इसे समाजी गतिविधियों, ग्रामीण विकास, और सामाजिक संगठनों के साथ जोड़ने का आदान–प्रदान किया। टैगोर ने शिक्षा को समृद्धि के रूप में देखा और इसे समाज के विकास में मदद करने का एक माध्यम माना (टैगोर, 1921)।

टैगोर ने शिक्षा को स्वतंत्रता और स्वाधीनता के रूप में भी देखा। उन्होंने यहां तक कहा कि शिक्षा छात्रों के विचारों और आत्मनिर्भरता की बढ़ावा देनी चाहिए ताकि वे आत्मनिर्भर नागरिक बन सकें और स्वतंत्रता से अपने जीवन का प्रबंधन कर सकें। उनका मानना था कि शिक्षा छात्रों को स्वतंत्रता और स्वाधीनता की भावना देनी चाहिए, जिससे वे स्वतंत्र रूप से सोच सकें और अपने विचारों का व्यक्ति बन सकें। उन्होंने शिक्षा को छात्रों की स्वतंत्रता को प्रोत्साहित करने का एक माध्यम माना और इसे एक उन्नत समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण रूप से योगदान देने का उपाय माना (यादव, 2013)।

इस रीति में, रवींद्रनाथ टैगोर ने शिक्षा के लिए एक नई दिशा दी और उसे समाजिक, मानवीय, और आर्थिक विकास के लिए एक महत्वपूर्ण साधन माना। उन्होंने यह दिखाया कि शिक्षा छात्रों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है और इसे समाजी विकास के लिए एक उपाय माना। उनके विचारों ने शिक्षा के उद्देश्य को नई दिशा दी, जिसमें समृद्धि, सामूहिक उन्नति, स्वतंत्रता, और स्वाधीनता के माध्यम से छात्रों का सम्पूर्ण विकास था। इसके अलावा, उन्होंने शिक्षा को जीवन से जोड़ने का मार्ग दिखाया और छात्रों को उनके व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं से समर्थन दिया। इन सभी प्रकार से, टैगोर के शिक्षा संबंधी विचारों का भारतीय शिक्षा प्रणाली पर गहन प्रभाव है और उनके विचारों ने शिक्षा को एक सामाजिक और मानवीय दृष्टिकोण से देखने का समयित मार्ग दिखाया (कुमारी, 2019)।

शिक्षा के स्वरूप के विषय में रवीन्द्रनाथ टैगोर के विचार बहुत व्यापक है। उनके अनुसार शिक्षा एक व्यापक प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य भौतिक प्रगति करता है तथा आध्यात्मिक पूर्णता की अनुभूति करता है। उनके अनुसार निश्चित शिक्षा के उद्देश्य भी बड़े व्यापक हैं। उन्होंने मनुष्य के शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक, नैतिक, सामाजिक एवं वैयक्तिक सभी प्रकार के विकास पर समान बल दिया है। वह शिक्षा के द्वारा राष्ट्रीय विकास तथा अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति की प्राप्ति भी करना चाहते थे। विस्तृत उद्देश्यों

की प्राप्ति के लिए उन्होंने विस्तृत पाठ्यक्रम का निर्माण किया है। उन्होंने खेल–कूद, समाज–सेवा तथा छात्र–स्वशासन को भी पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बनाया। ललित कलाओं और देश–विदेश की भाषाओं, साहित्य तथा संस्कृति को पाठ्यक्रम में स्थान देकर उन्होंने एक और भी बड़ा उपकार किया है (चक्रवर्ती, 2018)।

शिक्षण–विधियों के सम्बन्ध में भी टैगोर के विचार बड़े आधुनिक है। वह परम्परावादी थे परन्तु किसी भी आधुनिक सत्य को अस्वीकार नहीं करते थे। उन्होंने अधिगम में ज्ञानेन्द्रियों का प्रयोग और जीवित परस्थितियों में स्वाभाविक रूप से कार्य करते हुए अधिगम पर विशेष बल दिया। मातृभाषा को शिक्षा के माध्यम निश्चित कर शिक्षा को सरल और रूचिकर बनाया। टैगोर ब्रह्मचर्य जीवन को बड़ा महत्व देते थे और विद्यार्थी तथा अध्यापक दोनों से इसका पालन कराना चाहते थे, परन्तु इसके लिए वह किसी प्रकार के दण्ड का विरोध करते थे। उनका कहना था कि बच्चे को इस प्रकार का पर्यावरण देना चाहिए कि अनुशासन की समस्या ही न उठे। इसलिए प्रेम और सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार पर बल देते थे।

टैगोर ने शिक्षा के निर्माण स्तर निश्चित किए और उनके लिए विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रम का निर्माण किया। जो कार्य शेष रह गया, वह उनके अनुयायियों ने पूरा किया। धर्म शिक्षा, जन शिक्षा, स्त्री शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा और अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा के सम्बन्ध में टैगोर के विचार संकीर्णता से ऊपर हैं और बड़े विस्तृत हैं।

टैगोर के जीवन दर्शन के विकास में जिन तत्त्वों का प्रभाव पड़ा उन्हीं तत्त्वों का प्रभाव इनके शिक्षा–दर्शन के विकास पर भी पड़ा है। इनके शिक्षा दर्शन का इनके जीवन दर्शन से घनिष्ठ संबंध है। परिवार के प्रभाव के अतिरिक्त टैगोर के शिक्षा–दर्शन पर पाश्चात्य शिक्षा शास्त्रियों रूसो, फ्रोबेल, ड्यूबी तथा पेस्टालॉजी आदि के विचारों का भी गहरा प्रभाव पड़ा है। इन्होंने अपनी तीव्र बुद्धि के द्वारा प्राकृतिक तथा सामाजिक विज्ञानों का पर्याप्त ज्ञान प्राप्त कर लिया था, जिनका पर्याप्त प्रभाव इनके शिक्षा–दर्शन पर पड़ा। अनुभवों द्वारा इन्होंने शिक्षा के रहस्यों का ज्ञान प्राप्त किया और अपने समय की शिक्षा पद्धति के दोषों का अध्ययन किया। इस प्रकार स्वयं के प्रयत्नों के फलस्वरूप ही टैगोर विश्व की महान शिक्षा शास्त्री बने। एस.सी. सरकार ने लिखा है– ''इन्होंने शिक्षा के उन सभी सिद्धांतों की खोज स्वयं ही की, जिनका प्रतिपादन इन्हें आगे चलकर अपने ही लिए करना था, जिन्हें शान्ति निकेतन में व्यावहारिक रूप देना था।'' (सरकार, 1961)।

देश में समाज–सुधार, राष्ट्रीय चेतना तथा अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के विकास के लिए उन्होंने जो कार्य किए हैं, उनके लिए मानव जाति सदा आभारी रहेगी। ये सब कार्य उन्होंने साहित्य और शिक्षा के माध्यम से ही किए हैं। इसलिए कविता तथा साहित्यकार के साथ–साथ वह एक बड़े शिक्षा शास्त्री भी माने जाते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में गुरुदेव के अपने अनुभव थे। उन्होंने अपनी घरेलू शिक्षा के बन्धन और अपने समय की स्कूली शिक्षा की कुव्यवस्था के दर्शन किये थे जो आगे चलकर उनके शिक्षा–दर्शन का आधार बने। इस क्षेत्र में वह पाश्चात्य शिक्षा शास्त्री रूसो, पैस्टालोजी, फ्रोबेल तथा डी.वी. से भी प्रभावित नजर आते हैं। टैगोर के शिक्षा सम्बन्धी विचार उनकी अनेक रचनाओं में अभिव्यक्त हुए हैं। शान्ति निकेतन स्कूल तथा विश्व भारती विश्वविद्यालय की स्थापना की। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि शिक्षा के द्वारा मानव की भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों प्रकार की आवश्यकताओं की पूति होनी चाहिए। इसके लिए उन्होंने शिक्षा को मनुष्य के वास्तविक जीवन से सम्बन्धित करने पर बल दिया है।

टैगोर के द्वारा भारत ने विश्व को मानवता का सन्देश दिया है। साहित्य, दर्शन, शिक्षा तथा कला में उनकी देन अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इन्हीं क्षेत्रों में उन्होंने अमर कीर्ति प्राप्त की और जगत् की आंखों में भारत का नाम ऊँचा किया। टैगोर मानवता तथा मानवता के शुद्ध रूप बच्चे से बहुत प्यार करते थे। बच्चे को उन्होंने आदर, प्रेम, स्वतन्त्रता, सहानुभूति तथा उपक्रम का क्षेत्र प्रदान किया। मानव की अनिवार्य एकता पर टैगोर का विश्वास अन्तर्राष्ट्रीयवाद की ओर एक दूसरे के निकट लाने के लिए प्रयत्न किया। उनके शिक्षा दर्शन ने भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक तथा शिक्षा सम्बन्धी बुराइयों को दूर करने के बीज बोये।

निष्कर्ष

रवींद्रनाथ टैगोर के शैक्षिक दृष्टिकोण ने शिक्षा को एक नया आयाम दिया है। उनके विचार शिक्षा को सिर्फ पढ़ाई–लिखाई से नहीं, बल्कि जीवन का एक अनुभव समझते थे। उन्होंने शिक्षा को जीवन के साथी के रूप में देखा, जो विचारों, भावनाओं, और समाज के साथ जुड़ा होता है। टैगोर की दृष्टि ने शिक्षार्थी के व्यक्तिगत और सामाजिक विकास को बढ़ावा दिया। उन्होंने शिक्षा को सिर्फ ज्ञान की सीमाओं से बाहर ले जाकर, उसे जीवनशैली और समाज में सक्रिय भागीदारी का एक साधन बनाया। इस प्रकार, उनके शैक्षिक दृष्टिकोण ने शिक्षा को समर्थन और संपूर्ण विकास का माध्यम बनाया, जो छात्रों को सिर्फ ज्ञानी नहीं, बल्कि समर्थ और समझदार बनाने की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करता है।

वित्तीय सहायता और प्रायोजन : शून्य
हितों का टकराव : हितों का कोई टकराव नहीं है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कुमारी, निधि (2019). आधुनिक भारतीय शिक्षा में रवीन्द्रनाथ टैगोर के विचारों की प्रासंगिकता। संत जेवियर्स कॉलेज ऑफ एजूकेशन, 61(1), 1–5।
2. चक्रवर्ती, ए. (2018). रवींद्रनाथ टैगोर और ऋषि अरविंद घोष का शैक्षिक दर्शन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च एंड एनालिटिकल रिव्यूज, 5(3), 278–283।
3. टैगोर, रवींद्रनाथ. (1921). "शिक्षा और समाज." ब्रह्मचर्य, कोलकत्ता सं. 4, पृ. 133–141.
4. टैगोर, रवींद्रनाथ. (1910). गीतान्जली। कोलकताः इंडियन इन्स्टीट्यूट ऑफ वर्ल्ड कल्चर
5. यादव, आर. (2013). रवींद्र नाथ टैगोर के शैक्षिक दर्शन और आज की इसकी प्रासंगिकता का एक अध्ययन। सूचनात्मक और भविष्य अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल (आईजेआईएफआर) 1(2), 97–102
6. सरकार, एस. सी. (1961). टैगोरर्स एजूकेशस फिलोसोफी एण्ड एक्सपेरीमैनट, फिल–पेपर्स शांतिनिकेतन, विश्वभारती ।

https://doi.org/10.47997/sdes-ijir/4.6.2023:729-732